

डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 4, बाइबल हमें कैसे सिखाती है, बाइबल की शिक्षा के तीन स्तर, भाग 2

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह व्याख्यान 4 है, बाइबल हमें बाइबल की शिक्षा के तीन स्तरों के बारे में कैसे सिखाती है, भाग 2।

खैर, 1 कुरिन्थियों पर ई-बाइबिल सीखने के पाठ्यक्रम के हमारे परिचय में चौथे व्याख्यान में आपका स्वागत है।

जैसा कि मैंने आपको ओरिएंटेशन में बताया था, मेरा नाम गैरी मीडर्स है। मैं मिशिगन, यूएसए में ग्रैंड रैपिड्स थियोलॉजिकल सेमिनरी से ग्रीक और न्यू टेस्टामेंट का एमेरिटस प्रोफेसर हूँ। आपके साथ फिर से आकर बहुत खुशी हो रही है।

मुझे खुशी है कि आप प्रगति कर रहे हैं। परिचय थोड़ा लंबा लग सकता है, लेकिन हम कई मुद्दों को संबोधित कर रहे हैं जो मुझे लगता है कि बाइबल का अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं। अब, फिर से, मैंने उल्लेख किया कि हम इसे अंग्रेजी भाषा के दृष्टिकोण से देख रहे हैं, चाहे आपकी प्राथमिक भाषा कोई भी हो, आप शायद तीन या चार बाइबल पा सकते हैं जो हमारे द्वारा चर्चा किए गए मानदंडों को पूरा करती हैं। याद रखें, हमने इतनी सारी बाइबलों, इतने कम समय के मुद्दे से शुरुआत की थी।

यह सिर्फ एक आकर्षक वाक्यांश है जो इस तथ्य को दर्शाता है कि किसी भी भाषा में बहुत सारे अनुवाद हैं, और ईसाई लोगों को इससे निपटना पड़ता है। मैंने आपको एक प्रतिमान दिया है जहाँ आप यह कर सकते हैं कि वे किस तरह के अनुवाद हैं। आम तौर पर, अंग्रेजी या किसी भी भाषा की बाइबल का परिचय आपको बताएगा कि यह किस बारे में है, लेकिन मैंने जिन मुख्य बाइबलों का इस्तेमाल किया है, वे संभवतः अन्य भाषाओं में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वितरित की गई हैं, इसलिए आप किंग जेम्स या RSV या NIV या न्यू लिविंग ट्रांसलेशन ले सकते हैं, वे चार जो मैंने इस्तेमाल किए हैं, और उन्हें लगभग किसी भी भाषा में पा सकते हैं।

अब, हम इस बारे में भी बात कर रहे हैं कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है, और मैं शब्द कैसे का उपयोग करता हूँ। यह बाइबल की शिक्षा नहीं है, बल्कि यह वह तरीका है जिससे हम पवित्रशास्त्र से शिक्षा प्राप्त करते हैं। हमने शिक्षा के प्रत्यक्ष स्तर, शिक्षा के निहित स्तर और रचनात्मक संरचनाओं के बारे में बात की है।

हमने इन्हें पिरामिड के प्रतिमान में रखा है जहाँ आप नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते हैं, और यहीं पर हम हैं, हम आज इस अवधारणा पर चर्चा करना जारी रखेंगे कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है ताकि आप इस बात के प्रति अधिक जागरूक हो सकें कि आप जिस पाठ का उपयोग कर रहे हैं उसका आप किस तरह से उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, पृष्ठ 11 पर, हमारे पास प्रत्यक्ष,

निहित और रचनात्मक निर्माण का चार्ट है, जो बाइबल की शिक्षा के तीन स्तर हैं। मैं आपका ध्यान फिर से वहाँ आकर्षित करना चाहूँगा, और हम वहाँ से शुरू करेंगे और इसके बारे में सोचेंगे और अपने परिचय में इस विशेष घटक को समाप्त करने के लिए आगे बढ़ेंगे।

ठीक है, तो नीचे, हमारे पास बाइबल की प्रत्यक्ष शिक्षा का यह विचार है। इससे हमारा मतलब है कि कोई क्या प्रदर्शित कर सकता है। अब, यदि आप किसी पाठ पर काम कर रहे हैं, तो आपको शोध और टिप्पणियों आदि के माध्यम से ऐसा करना होगा, लेकिन प्रत्यक्ष शिक्षा वह है जिसे कोई ऐसे संदर्भ में प्रदर्शित कर सकता है जहाँ ईसाई चर्च ने उचित सहमति की कल्पना की है, किसी पाठ के अर्थ को उचित सहमति तक पहुँचाया है, जिससे लगभग सभी सहमत होंगे कि वह विशेष अंश यही संबोधित कर रहा है।

और अगर आप सही तरह के साहित्य का अध्ययन करते हैं, तो आप देखेंगे कि बाइबल के लिखे जाने के समय, सैकड़ों साल और हज़ारों साल पहले, उस विशेष समय की परंपराओं और इसमें शामिल साहित्यिक विधा, चाहे वह कथा हो या कविता या पत्र, के दृष्टिकोण से अर्थ सामने लाया गया है और आप पाएंगे कि जब आप अच्छे साहित्य में खोज करते हैं तो एक सर्वसम्मत अर्थ होता है। और यह लेखकीय इरादे के सबसे करीब है। लेखकीय इरादे का मतलब है कि मूल लेखक उस समय और स्थान में अपने पाठकों को क्या संदेश देना चाहता था जिसमें वह काम कर रहा था।

परिणामस्वरूप, हमारे पास एक उत्पाद है। हम इसे प्रत्यक्ष शिक्षण कहेंगे। अब, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि प्रत्यक्ष शिक्षण सरल है।

उदाहरण के लिए, चार्ट के बाईं ओर, हम शिक्षण आशय के बारे में बात करते हैं, जो प्रत्यक्ष शिक्षण है। वह पाठ क्या सिखाने का इरादा रखता है? खैर, हम आज्ञाओं को पढ़ सकते हैं और एक पर आ सकते हैं, तुम हत्या नहीं करोगे। लेकिन इसका क्या मतलब है? अगर हम इसे सतही तौर पर पढ़ें, तो हम कई तरह के जवाब पा सकते हैं।

एक चरम सीमा गैर-लड़ाकू हो सकती है, उदाहरण के लिए, कि आपको कभी हत्या नहीं करनी चाहिए। क्या उस आदेश का यही अर्थ है? और इसलिए, जबकि हमारे पास एक सरल आदेश है, जब हम इसे सूक्ष्मदर्शी से देखते हैं और इसका अध्ययन करते हैं, तो हम इस बात का सामना करेंगे: क्या इसका मतलब है कि तुम हत्या नहीं करोगे? या इसका मतलब है कि तुम कभी भी हत्या नहीं करोगे, उदाहरण के लिए, युद्ध में? इसलिए, जो सूक्ष्मदर्शी से सरल लग सकता है, उस तरह के विचार का अर्थ निर्धारित करना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसका क्या अर्थ है कि आपको अनंत जीवन के लिए यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए? विश्वास करने की प्रकृति क्या है? क्या यह केवल बौद्धिक सहमति है कि आप कहते हैं, हाँ, मैं जानता हूँ कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह मेरे पापों के लिए मरा? और फिर भी, विश्वास करने का किसी व्यक्ति के आंतरिक भाग से कुछ लेना-देना है, जिससे हम विश्वास के उस अर्थ में अधिक अंतरंग स्तर पर जुड़ते हैं।

एक विश्वास है, एक आस्था है। उदाहरण के लिए, जब यीशु लाज़र की कब्र पर आए और मरियम ऊपर आई, तो उन्होंने मरियम से कहा कि अगर तुम विश्वास करोगी, तो तुम परमेश्वर की महिमा को देख सकोगी। खैर, मरियम का एक विश्वास था।

उसने जॉन 21 में उस संदर्भ में कहा था कि उसे विश्वास है कि यीशु समस्या का समाधान कर सकता है। लेकिन यीशु ने उस पर विश्वास करने के लिए दबाव डाला। विश्वास करना एक ऐसी चीज़ है जो विश्वास के संदर्भ में आपने खुद को प्रतिबद्ध किया है।

इसलिए ऐसी कई तरह की बातें हैं जो आम सहमति वाली राय लग सकती हैं, लेकिन यह आम सहमति वाला बयान है। हम बयान देते हैं, लेकिन उन बयानों का क्या मतलब है? यह सब बाइबल के अध्ययन का हिस्सा है। लेकिन एक सीधा स्तर है जहाँ हम कुछ उचित आम सहमति प्राप्त करते हैं, लेकिन वह आम सहमति हमारे दिमाग से नहीं आती है।

यह शोध और पढ़ने का परिणाम है। एक निहित स्तर है जिसके बारे में हम अगले पृष्ठ पर थोड़ा और विस्तार से बताने जा रहे हैं। और फिर सबसे ऊपर रचनात्मक निर्माण स्तर है।

हम इसे धर्मशास्त्रीय विश्लेषण कहते हैं। रचनात्मक निर्माण पूरे बाइबल में प्रमुख मैक्रो-प्रेरक अध्ययन हैं जो अंततः समझ की एक प्रणाली बनाते हैं। समझ की वाचा धर्मशास्त्र प्रणालियाँ हैं।

ऐसी कई प्रणालियाँ हैं जिन्हें वे समझने की व्यवस्थागत प्रणालियाँ कहते हैं। और इन प्रणालियों को समझने के लिए कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। लेकिन ये प्रणालियाँ वही हैं जिन्हें लोगों ने पूरी बाइबल को समझने के लिए बड़े पैमाने पर कल्पना और निर्माण किया है।

लेकिन होता यह है कि आप अपनी प्रणाली के साथ बाइबल में वापस जाते हैं, और आप उस प्रणाली को पाठ पर लागू कर सकते हैं और पाठ को वही कहने के लिए मजबूर कर सकते हैं जो प्रणाली ने मानने का फैसला किया है। इसलिए, बाइबिल के अध्ययन में बहुत सारी चुनौतियाँ हैं। हमने इस तथ्य के बारे में बात की कि इस चार्ट के शीर्ष पर, रचनात्मक निर्माण स्तर एक उच्च वर्गीकरण है।

उच्च वर्गीकरण का मतलब है कि हमें उन चीज़ों पर अधिक आलोचनात्मक सोच लागू करनी होगी जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं। तो, आपके पास सभी प्रकार के स्तर हैं, प्रत्यक्ष स्तर, ऐसी चीज़ें जो सामान्य भाजक और अपेक्षाकृत स्पष्ट लग सकती हैं। आपके पास निहित स्तर हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं और फिर भी उनका समर्थन करने के लिए कोई प्रमाण पाठ नहीं हो सकता है, इसलिए मैं इसके बारे में थोड़ा और बात करूँगा।

और फिर आपके पास रचनात्मक संरचनाएं हैं, जो शास्त्र की ये विशाल मैक्रो समझ हैं जिनसे लोग वास्तव में बाइबिल के ग्रंथों की व्याख्या करते हैं - क्रूर तथ्यों से लेकर उच्च आलोचनात्मक सोच वाली प्रणालियों तक। अब, मेरे नोट्स में पेज 11 के नीचे पैराग्राफ पर ध्यान दें।

ईसाई इस बात की पुष्टि करते हैं कि बाइबल उनके विश्वास और व्यवहार के लिए ज्ञान का अंतिम स्रोत है। लेकिन जब वे बाइबल के किसी ऐसे अंश की तलाश करते हैं जो उनके वर्तमान परिवेश

के प्रश्नों को संबोधित करता हो, तो उन्हें अक्सर पता चलता है कि ऐसा कोई पाठ नहीं है जो सीधे उनकी चिंताओं को संबोधित करता हो। उदाहरण के लिए, हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसमें विज्ञान बहुत जटिल और विस्तृत है और यहाँ तक कि जीवन का विज्ञान भी।

और धर्मग्रंथों में बहुत ज़्यादा ऐसा पाठ नहीं है जो इच्छामृत्यु जैसी चीज़ों को संबोधित करता हो। बाइबल की सीधी शिक्षा के संदर्भ में ट्रांसजेंडर जैसी चीज़ों को संबोधित किया जा सकता है। इसलिए हम जाते हैं, और हम उस चीज़ की तलाश करते हैं जिसे हम प्रमाण पाठ कहते हैं।

प्रूफ टेक्स्ट एक शब्दावली है जिसका उपयोग हम इस तथ्य से संबंधित करने के लिए करते हैं कि लोग बाइबल की किसी आयत को निकाल देते हैं। उस बाइबल की आयत का उपयोग करके, वे इस बारे में दावे कर रहे हैं कि किस बात पर विश्वास किया जाना चाहिए। अब, हम सभी ने बाइबल की आयतों को अपने ऊपर खींच लिया है।

मुझे एक बात याद है, और आपने भी शायद इसका अनुभव किया होगा। कोई व्यक्ति 1 थिस्सलुनीकियों 5 को निकालेगा। बुराई के सभी रूपों से बचें। यह किंग जेम्स अनुवाद है, एक पुराना बहुत औपचारिक अनुवाद।

बुराई के सभी रूपों से बचें। और फिर कोई हमें बताएगा कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे गलत प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, यह आपके अनुभव का हिस्सा भी नहीं हो सकता है।

लेकिन ईसाई चर्च में एक समय था, खास तौर पर पश्चिम में, जहाँ कहा जाता था कि आपको व्यावसायिक मूवी थिएटर में नहीं जाना चाहिए। उस समय, टीवी पर जो चीज़ें दिखाई जाती थीं, वे ज़्यादा नीरस होती थीं, और थिएटर नैतिकता और उदाहरण की सीमा को लांघ रहे थे। और इसलिए ईसाई कहते थे कि आपको इससे बचना चाहिए।

फिर वे आयत हटा देंगे। बुराई के सभी रूपों से बचें। या कोई आपसे कह सकता है, आप उस विशेष स्थान पर खाना नहीं खा सकते क्योंकि वह एक खुला बार है, और यह एक बुरा उदाहरण है, और आपके पास ऐसे लोग हैं जो जोर से बोलते हैं और अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं और इसी तरह की अन्य बातें।

इसलिए, बुराई के सभी आभासों से बचें। और वे उस प्रमाण पाठ का उपयोग करेंगे। खैर, समस्या यह है कि उस अनुवाद में प्रमाण पाठ कुछ ऐसा संदेश दे रहा है जो पाठ स्वयं बताने की कोशिश नहीं कर रहा है।

दूसरे शब्दों में, यह संगति के कारण अपराध बोध के बारे में नहीं है, यही कारण है कि कुछ लोग दिखावट शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह संगति के कारण अपराध बोध नहीं है। हालाँकि, हर तरह की बुराई से बचना एक बेहतर अनुवाद है।

और अगर आप अनुवादों की निरंतरता को देख रहे थे, तो आप हर तरह की बुराई को देखने के लिए प्रेरित होंगे। अब, एक तरह की बुराई ऐसी चीज है जिसे बाइबिल में नैतिक समस्या के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। फिर, आपके पास उस अंश का संदर्भ है।

यह सिर्फ़ ऐसी चीज़ नहीं है जिसे पन्ने के सामने से खींचकर लोगों को किसी खास दिशा में ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जा सके। मुझे डर है कि हम सभी ने बाइबल का इस्तेमाल इसी तरह किया है। इसलिए, हमें शास्त्र की सीधी शिक्षा को समझना होगा ताकि यह अन्य स्तरों पर भी ज़ोरदार और उपयोगी हो।

अब, पृष्ठ 12 पर जाएँ, और मुझे आपके साथ इस बारे में सोचना जारी रखने दें। मैं थोड़ा दोहराव करने जा रहा हूँ, लेकिन दोहराव से हमें मुद्दों पर काम करने में मदद मिलेगी। वास्तव में, मैं यह कहना चाहूँगा कि सीखने के तीन आर हैं।

यह एक तरह की कहावत और मेरे पालन-पोषण में एक रूढ़िवादिता थी। सीखने के तीन आर हैं पढ़ना, लिखना और अंकगणित। और वे उन शब्दों में आर पर मज़ाक करते थे।

लेकिन सच कहें तो सीखने के तीन आर हैं पढ़ना, पढ़ना और पढ़ना। और हम कह सकते हैं दोहराव, दोहराव, दोहराव। जितना ज़्यादा हम कुछ सुनते हैं, उतनी ही ज़्यादा संभावना है कि हम उसे अपने वैचारिक फ़ोकस में लाना शुरू कर दें।

तो, पृष्ठ 12 पर दी गई सीधी शिक्षा किसी दिए गए संदर्भ के लेखकीय, पाठ्य अभिप्राय को समझने से संबंधित है। अब मैं कहता हूँ लेखकीय, पाठ्य। मैं इसे समझाता हूँ।

यह दावा करना बहुत मुश्किल है कि मैं जानता हूँ कि पॉल के मन में क्या था क्योंकि मैं पॉल से आमने-सामने और आमने-सामने बात नहीं कर सकता। मेरे पास वह उत्पाद है जो पॉल ने मुझे छोड़ा था, जो कि पाठ है, जो कि बाइबल है, जो कि पॉल ने लिखी हैं। इसलिए, मैं उस लेखक के उन पाठों से पाठ्य अभिप्राय को समझने की कोशिश कर रहा हूँ और ऐसा करके, मैं पॉल के लेखकीय अभिप्राय के जितना करीब हो सकता हूँ, उतना करीब पहुँच रहा हूँ।

और फिर भी, जैसा कि हमने अन्य तरीकों से चर्चा की है, और हमने बाइबल अनुवादों में भी देखा है, ईसाइयों के बीच हमेशा किसी दिए गए बाइबल श्लोक के अर्थ के बारे में पूरी सहमति नहीं होती है। हर कोई दावा करेगा, मुझे पता है कि पॉल का यहाँ क्या मतलब था, और फिर भी कुछ ऐसा कहेगा जो अलग हो सकता है। बाइबल अनुवाद भी यही करते हैं।

हमने चार्ट में इसे देखा। और इसलिए, जब हम प्रत्यक्ष शिक्षण स्तर के बारे में बात करते हैं, तो लेखकीय, पाठ्य अभिप्राय को समझते हुए, हम सर्वसम्मति से राय के आधार पर और किसी दिए गए पाठ के अर्थ के बारे में अपनी स्वयं की धार्मिक समझ के भीतर तर्कसंगत निर्णय लेते हुए जितना संभव हो सके उतना करीब पहुँचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। और हम उसी आधार पर आगे बढ़ते हैं।

हमें ऐसा करना ही होगा। यही तरीका है। और जैसा कि मैंने पहले बताया, ऐसा करने से परमेश्वर की महिमा होती है।

उसने हमें अपने स्वरूप में सोचने, महसूस करने, चुनने के लिए बनाया है। और जब हम परमेश्वर की छवि में सृजित होने की विशेषताओं का प्रयोग करते हैं, तो वह महिमावान होता है, वे तर्कसंगत विशेषताएँ जो उसने हमें दी हैं। और उसने हमें अध्ययन करने, खुद को परमेश्वर के लिए स्वीकृत दिखाने, एक ऐसे कार्यकर्ता के रूप में दिखाने के लिए भी कहा है जिसे शर्मिदा होने की आवश्यकता नहीं है।

तो, यह प्रत्यक्ष शिक्षा एक सरल आदेश की तरह सीधी हो सकती है। तुम्हें कुछ करना चाहिए। तुम्हें कुछ नहीं करना चाहिए।

ये आम तौर पर काफी हद तक स्पष्ट हैं। और फिर भी हमें अभी भी अध्ययन करना है। तुम हत्या नहीं करोगे यह उतना स्पष्ट नहीं है जितना कि तुम अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच नहीं करोगे।

मुझे लगता है कि हम नैतिक आदेश को ज़्यादा जल्दी समझ लेंगे जैसे कि तुम अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच मत करो, जैसे तुम हत्या नहीं करोगे। हम इस बारे में अनुमान लगा सकते हैं कि हत्या न करने का क्या मतलब है। लेकिन फिर हम बाइबल को देखते हैं, और भगवान ने हत्या करने का आदेश दिया है।

क्या परमेश्वर ने अपनी आज्ञा तोड़ी? नहीं। फिर, हमें इस बारे में थोड़ा और सोचना चाहिए कि उस आज्ञा का क्या मतलब है। तो, यह कुछ ऐसा हो सकता है जो सीधे आदेश जितना ही सरल लगे।

बाइबल की सर्वोच्च आज्ञाएँ कि ईश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी से प्रेम करो, बहुत सीधी और सरल लगती हैं। लेकिन फिर, जब हम उनकी जाँच करना शुरू करते हैं, तो हमें सवाल पूछना पड़ता है, अच्छा, इसका क्या मतलब है? इसका क्या मतलब है कि आपको अपने दुश्मन से प्रेम करना चाहिए? क्या इसका मतलब है कि आप अपने दुश्मन पर भावनात्मक रूप से हावी हो जाएँ? क्या इसका मतलब है कि आप अपने दुश्मन के लिए सबसे बड़ी भलाई की योजना बनाएँ? और इसका क्या मतलब होगा? आप किस तरह से नियंत्रित करेंगे कि भलाई का क्या मतलब है? आप देखिए, जैसे ही हम वास्तविक सवाल पूछना शुरू करते हैं, हमें एहसास होता है कि उन विचारों को संबोधित करने के लिए हमें बहुत सोचना होगा। इसलिए प्रत्यक्ष शिक्षण जरूरी नहीं कि सरल शिक्षण हो, लेकिन प्रत्यक्ष शिक्षण वह है जहाँ हम ईसाई समुदाय को, विशेष रूप से, यदि आप चाहें, तो उस समुदाय के भीतर, जो आप संचालित करते हैं, बाइबिल के पाठ के अर्थ के बारे में आम सहमति पर पहुँचते हुए देखते हैं।

मैं यहाँ एक चेतावनी देना चाहूँगा और कहूँगा कि चाहे हम किसी भी समुदाय में हों, हमें अन्य रूढ़िवादी समुदायों का सम्मान करना चाहिए क्योंकि वे कभी-कभी हमसे अलग तरीके से आम सहमति पर पहुँचते हैं। यहाँ तक कि इंगील समुदाय, जो अमेरिकी बाइबिल संदर्भ में एक छोटा समुदाय है, कुछ बहुत बड़े तरीकों से थोड़ा सहमत है। फिर भी हमें एक साथ आने और आम

सहमति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए सहमत या असहमत होना पड़ता है, जिन्हें हम अपने दम पर हासिल नहीं कर सकते।

तो, प्रत्यक्ष शिक्षण। व्याख्या और बाइबिल धर्मशास्त्र प्रत्यक्ष स्तर पर काम करते हैं। क्या आपने कभी कोई टिप्पणी उठाई है, और आप बस यह जानने के लिए बेताब हैं कि यह आपको बताए कि किसी पुस्तक का क्या अर्थ है? और आप पढ़ते रहते हैं, और आप पढ़ते रहते हैं, और आप पढ़ते रहते हैं, और आपको ये सभी विवरण और ये सभी अलग-अलग जानकारी मिलती रहती है, लेकिन आप बड़ी तस्वीर तक नहीं पहुँच पाते।

खैर, टिप्पणियाँ छोटे-छोटे टुकड़ों को देखने के लिए बनाई जाती हैं। एक अच्छी टिप्पणी उसे एक बड़े चित्र के फ्रेम में रखेगी। लेकिन सच तो यह है कि अगर आप कहीं जाते हैं, तो आपको जानकारी मिल रही है।

यह उपन्यास जैसा नहीं है। इसलिए, यह थोड़ा ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। लेकिन कमेंट्री सीधे स्तर पर काम करती है, और कमेंट्री और जिस सीरीज़ में यह है, उसकी प्रकृति के आधार पर यह आपको अलग-अलग तरीकों से उस बड़े स्तर पर ले जाती है।

तो, प्रत्यक्ष स्तर। निहित शिक्षण स्तर समूह में सबसे मुश्किल हो सकता है। निहित शिक्षण स्तर उन अवधारणाओं से संबंधित है जो किसी संदर्भ में बाइबिल के शब्दों द्वारा सीधे नहीं बताई गई हैं, लेकिन वे शिक्षाएँ हैं जिन्हें बाइबिल समुदाय बाइबिल के कथनों और संदर्भ के विस्तार के रूप में पहचानता है।

मैं इसे आपके लिए पढ़कर सुनाता हूँ क्योंकि इससे आपको बेहतर समझ मिलेगी, और आप इसे फिर से पढ़ सकते हैं और इसके बारे में सोच सकते हैं। यह स्तर, यह निहित शिक्षण स्तर, कई महत्वपूर्ण सिद्धांतों के लिए जिम्मेदार है। उदाहरण के लिए, ईसाई होने के लिए, हमें ईसाई विचार के लिए त्रिदेव के सिद्धांत को आवश्यक मानना होगा।

हमारे पास त्रिएकत्व के सिद्धांत के बिना ईसाई धर्म नहीं है। हालाँकि, त्रिएकत्व का सिद्धांत निहित स्तर की शिक्षा है, न कि प्रत्यक्ष स्तर की शिक्षा। दूसरे शब्दों में, आप बाइबल में कोई प्रमाण पाठ नहीं ढूँढ़ सकते जो केवल यह कहता हो कि त्रिएकत्व है या कोई संदर्भ जहाँ यह कहा गया हो कि त्रिएकत्व है, और फिर वह उस बाइबलीय संदर्भ में उसे खोलना शुरू कर देता है।

ऐसी कोई चीज़ मौजूद नहीं है। अब, अगर आपने पहली बार ऐसा सोचा है, तो यह बहुत डराने वाला हो सकता है। तो क्या इसका मतलब यह है कि हम त्रित्व के बारे में अस्थिर आधार पर हैं? नहीं, इसका मतलब यह नहीं होना चाहिए।

एलिस्टेयर मैकग्राथ, एक प्रमुख अंग्रेजी विद्वान और शिक्षक, ने टिप्पणी की, और मैं उद्धृत करता हूँ, यह पृष्ठ 12 पर इस पैराग्राफ के मध्य में है: त्रिएकत्व के सिद्धांत को पवित्रशास्त्र में प्रकट और ईसाई अनुभव में जारी दिव्य गतिविधि के पैटर्न पर निरंतर और आलोचनात्मक चिंतन की प्रक्रिया का परिणाम माना जा सकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि पवित्रशास्त्र में त्रिएकत्व का सिद्धांत है। अब, उसका मतलब यह है कि पवित्रशास्त्र हमें प्रत्यक्ष शिक्षा नहीं देता है।

यह हमें निहित शिक्षा दे रहा है। वह इस कथन से यह नहीं कह रहा है कि त्रिएकत्व का सिद्धांत जैसी कोई चीज़ नहीं है। वह यह कह रहा है कि इसके लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण पाठ जैसी कोई चीज़ नहीं है।

मैं इसे फिर से कहना चाहता हूँ। इसका मतलब यह नहीं है कि पवित्रशास्त्र में त्रिएकत्व का सिद्धांत है। बल्कि, पवित्रशास्त्र एक ऐसे परमेश्वर की गवाही देता है जिसे त्रिएकत्व के तरीके से समझने की ज़रूरत है।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। तो, आप देखिए, प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण स्तरों को समझना आपको एक पाठक के रूप में यह समझने में मदद करेगा कि इन मॉडलों को समझने वाले विद्वान उस समय मॉडल को आपके सामने रखे बिना क्या कहेंगे। आपको हमेशा पंक्तियों के बीच पढ़ने में सक्षम होना चाहिए और उस अनुभव और पृष्ठभूमि को समझना चाहिए जो विद्वान लिखते समय लाते हैं।

और मैकग्राथ इस तरह का संदर्भ यहाँ ला रहे हैं। वह हमारे सामने एक निहित शिक्षा, त्रिएकता की प्रकृति को ला रहे हैं, जो कि बिल्कुल महत्वपूर्ण है। यह बाइबल की एक निहित शिक्षा है।

यह ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए हमारे पास कोई प्रमाण पाठ हो। इसलिए, हम यहाँ देख सकते हैं कि प्रारंभिक चर्च के पिताओं के बहुत से काम त्रिएकत्व के पंथीय विकास में, मसीह के दो स्वभावों के पंथीय विकास में, और इस तथ्य में कि मसीह ईश्वर है। यह पंथीय विकास निहितार्थ की श्रेणी को प्रमाणित करता है।

व्यवस्थित धर्मशास्त्र विषयों की कई मूल अवधारणाएँ शिक्षण की निहित श्रेणी को दर्शाती हैं। यह बड़ी तस्वीर है, वृहद तस्वीर। और कई ईसाई और मुझे लगता है कि यह एक सामान्य अनुभव होगा, इन वृहद चीज़ों को सुनने से पहले वे शिक्षण के सूक्ष्म स्तर को संबोधित और देखते हैं।

अब, अगर आप नए ईसाई हैं या शायद ऐसे ईसाई हैं जिन्हें धर्मग्रंथों की पर्याप्त जांच करने और इन बातों को सीखने का मौका नहीं मिला है, तो यह आपके लिए थोड़ा डराने वाला हो सकता है, पहली बार यह सुनना। लेकिन यह बेहद महत्वपूर्ण है।

अन्यथा, आप वही होंगे जिसे मैंने एक हेर्मेनेयुटिकल वेंटिलोकिस्ट कहा है। बाइबल को इन प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण तरीकों से आपको सिखाने देने के बजाय, अपने समुदाय के संदर्भ में, आप बाइबल से वही कहलवाएंगे जो आप उससे कहलवाना चाहते हैं। और यदि आप काफी समय तक और काफी मेहनत से देखें, तो आप बाइबल में ऐसे शब्द पा सकते हैं जो आपकी अपेक्षाओं को पूरा करेंगे, कि उन शब्दों का उस संदर्भ से कोई लेना-देना नहीं हो सकता है जिसका आप वास्तव में उस बाइबल के संदर्भ में उपयोग कर रहे हैं।

मैं इसे समझाने के लिए एक और उदाहरण का उपयोग करूँगा। हर रविवार की सुबह, हम जाते हैं, और हम प्रचारकों को सुनते हैं, या सप्ताह के अन्य दिनों में, या अन्य प्रकार की स्थितियों में,

हम उन लोगों को सुनते हैं जो उठते हैं और हमसे बात करते हैं। और यदि आप एक रूढ़िवादी ईसाई क्षेत्र में रहते हैं, तो वे आमतौर पर हमसे बाइबल से बात करते हैं।

वे हमें बता रहे हैं कि बाइबल का क्या मतलब है। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो बाइबल में प्रशिक्षित है और दशकों से बाइबल पढ़ा रहा है, मेरे लिए सबसे कठिन कामों में से एक है किसी को यह दावा करते हुए सुनना कि वे मुझे बाइबल का क्या मतलब बता रहे हैं। जब मैं सुनता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें इस बात का कोई सुराग नहीं है कि उस संदर्भ का क्या मतलब है।

ऐसा करना बहुत मुश्किल है क्योंकि बात यह है कि वे बाइबल की सच्चाई बोल रहे हैं। वे बाइबल में गलत जगह का इस्तेमाल कर रहे हैं।

और कभी-कभी, यदि आप कुछ प्रचारकों को बार-बार सुनते हैं, तो वे हर बार लगभग एक ही बात कहते हैं, बाइबल में अलग-अलग जगहों से। क्या बाइबल इतनी नीरस है? या क्या हम शास्त्रों की जांच करने में विफल रहे हैं कि इन ग्रंथों का क्या अर्थ है ताकि हम बाइबल द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं का खजाना प्राप्त कर सकें? तो, क्या होता है कि लोग उठते हैं और शास्त्रों के अर्थ के बारे में अपने सिर के ऊपर से ही उपदेश देते हैं। और वे सिर थोड़े छोटे होते हैं।

और इसलिए, जो होता है वह यह है कि वे बार-बार एक ही बात कहते हैं, बाइबल में अलग-अलग जगहों से, मानो वे बाइबल की शिक्षा दे रहे हों। वे उन संदर्भों में नहीं जा रहे हैं। वे जो कह रहे हैं वह बाइबल के अनुसार सत्य हो सकता है।

और अक्सर ऐसा ही होता है। वे अच्छे दिल वाले लोग हैं जो यीशु पर विश्वास करते हैं और यीशु से प्यार करते हैं। लेकिन वे यह नहीं बता रहे हैं कि उस संदर्भ का क्या मतलब है।

और इस अर्थ में, उन्होंने बाइबल को ही कमज़ोर कर दिया है। मुझे डर है कि हमारी कई संस्कृतियों ने पवित्रशास्त्र के प्रति सम्मान खो दिया है क्योंकि, ईसाई कार्यकर्ताओं के रूप में, हमने बाइबल का अध्ययन करने के अपने तुच्छ तरीकों, अपनी भावनात्मक भक्ति के साथ उस सम्मान को कमज़ोर कर दिया है, बजाय इसके कि पवित्रशास्त्र का अर्थ क्या है, इसकी तर्कसंगत व्याख्या की जाए। मेरी आपसे आशा है कि, जब आप कुरिन्थियों की पुस्तक का अध्ययन करेंगे, तो आप बाइबल के पाठ की जाँच करना सीखेंगे ताकि यह आपको सिखाए न कि आप इसे सिखाएँ।

यह एक चुनौती है जिसका हम सभी को सामना करना चाहिए। तो, प्रत्यक्ष शिक्षण, निहित शिक्षण। जैसा कि आप देख सकते हैं, निहित शिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि त्रिदेव जैसी महत्वपूर्ण और अत्यंत महत्वपूर्ण चीज़ इसी क्षेत्र में आती है।

फिर, हम पिरामिड के सबसे ऊपर रचनात्मक निर्माणों पर आते हैं। पृष्ठ 12 पर फिर से कथन पर ध्यान दें। रचनात्मक निर्माण स्तर मैक्रो के बारे में किसी के दृष्टिकोण को चुनने का उत्पाद है, जो इस बात की एक बड़ी समझ है कि बाइबल ने कुछ विषयों को कैसे तैयार किया है।

उदाहरण के लिए, यह पक्षपातपूर्ण प्रकार की व्याख्या में बदल जाता है। मैं यहाँ कुछ शब्दों का उपयोग करने जा रहा हूँ। हो सकता है कि वे कुछ ऐसे हों जिनका आपने अनुभव किया हो।

शायद वे नहीं हैं। आप शायद अन्य उदाहरण जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए, क्या आप पृथ्वी के इतिहास और भविष्य के बारे में अपनी समझ में प्री-मिलेनियल या ऑल-मिलेनियल हैं? ये दो प्रमुख निर्माण हैं जिनका अर्थ इस बात से है कि आप बाइबल को कैसे पढ़ते हैं और बाइबल से क्या पढ़ते हैं।

क्या आप एक वाचा धर्मशास्त्री, एक व्यवस्थावादी, या कोई अन्य निर्माण हैं जो संपूर्ण बाइबल का संश्लेषण प्रदान करता है? क्या आप शास्त्रों को पढ़ते समय एक आर्मिनियन या कैल्विनिस्ट हैं? या शायद, जैसा कि मैंने कहा, बस भ्रमित हैं। मुझे लगता है कि बहुत से लोग भ्रमित हैं। मुझे उम्मीद है कि आपने इन चरम श्रेणियों में से प्रत्येक के बारे में सोचा होगा जो विरोधाभासी नहीं हैं, लेकिन जो विशिष्ट ग्रंथों की व्याख्या और एक ईसाई विश्वदृष्टि की व्यापक समझ में वास्तव में एक दूसरे के साथ संघर्ष में हैं।

प्री-मिलेनियलिस्ट और ऑल-मिलेनियलिस्ट का नज़रिया अलग है। अब, उनके पास बहुत सारे समान गुण हैं। बहुत सारे समान गुण।

और आप इस तथ्य को भी नहीं जानते कि आप एक या दूसरे से प्राप्त साहित्य का उपयोग कर रहे हैं। और कभी-कभी आप यह भी नहीं जानते क्योंकि वे उस विशेष पुस्तक या टिप्पणी में उस ढोल को पीटने की कोशिश नहीं कर रहे हैं जिस पर वे काम कर रहे हैं। कैल्विनिस्ट और आर्मिनियन और वाचा और डिस्पेंसेशनलिस्ट और लोग इन सभी अलग-अलग दृष्टिकोणों के बारे में कई बार बहुत गर्म और परेशान हो जाते हैं।

लेकिन उन दृष्टिकोणों के तथ्य ही उस प्रतिमान को साबित करते हैं जिसे मैं आपको समझाने की कोशिश कर रहा हूँ। वे रचनात्मक निर्माण हैं। उनमें से किसी के लिए कोई प्रमाण पाठ नहीं है।

अब, वे बहुत सारे टेक्स्ट का उपयोग करेंगे, लेकिन वे उन्हें सिस्टम के भीतर उपयोग करते हैं। और यह समझना और समझना हमेशा आसान नहीं होता है। मेरी राय में, इनमें से प्रत्येक प्रकार के विचारों के नौसिखिए बहुत परेशान हो जाएंगे क्योंकि वे खुद को कुछ रचनात्मक संरचनाओं के लिए प्रतिबद्ध करते हैं जैसे कि वे दिव्य हों।

और वे अपनी समझ को देवता मानते हैं। ये सभी विचार अंततः सही नहीं हो सकते। उनके बीच बहुत से ऐसे सामान्य तत्व होंगे जो सही होंगे।

लेकिन इनके बीच अभी भी महत्वपूर्ण अंतर हैं, विरोधाभासी नहीं, बल्कि इन दो विकल्पों के बीच कि आपको जीवन को कैसे समझना चाहिए। अब, यह जीवन का एक तथ्य क्यों है? भगवान ने इसे हमारे लिए आसान क्यों नहीं बनाया? उन्होंने इन सभी भेदों और मतभेदों को क्यों नहीं मिटा दिया? इसके कई उत्तर हो सकते हैं, लेकिन मेरा उत्तर यह है: जब उन्होंने हमें अपनी छवि में बनाया, तो उन्होंने हमें रोबोट बनने के लिए नहीं बनाया। उन्होंने हमें बाइबल में सभी उत्तर नहीं दिए।

उन्होंने हमें एक संविधान दिया। वास्तव में, यह अमेरिकी संविधान के समान है और यह आश्चर्यजनक रूप से विभिन्न समय और स्थान और विभिन्न संस्कृतियों को कवर कर सकता है और फिर भी एक देश का मार्गदर्शन कर सकता है, भले ही समस्या यह है कि इसे चुनौती दी जा रही है, बेशक। और आप देखते हैं कि इसे चुनौती दी जानी चाहिए।

अगर वे हमारे मार्गदर्शन के तरीके को बदलना चाहते हैं तो मुझे इससे छुटकारा पाना होगा। यह राजनीतिक है, जिसके बारे में मैं ज्यादा नहीं सोचता। लेकिन सच तो यह है कि हमारे पास ऐसी व्यापक समझ है जो हमारा मार्गदर्शन करती है।

और कभी-कभी हम उनके प्रति इतने प्रतिबद्ध हो जाते हैं कि हम यह नहीं सुन पाते कि बाइबल क्या कहती है। इसलिए, मुझे लगता है कि हमें बाइबल से शुरुआत करनी चाहिए और दूसरों की ओर काम करना चाहिए। और हर कोई ऐसा करता है, लेकिन दिन के अंत में, आपको प्रतिमानों के बारे में पता होना चाहिए, दोनों धर्मशास्त्रीय विश्वकोश और बाइबल हमें कैसे सिखाती है।

आपको इन प्रतिमानों के बारे में जागरूक होना चाहिए और लगातार इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि आप किसी भी समय अपनी समझ के मामले में कहाँ हैं और आप दूसरों को क्या समझाने की कोशिश कर रहे हैं। जब हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में प्रवेश करते हैं, तो हम कुछ गंभीर धार्मिक मुद्दों के बारे में अलग-अलग विचारों में डूबे हुए होंगे। इंजीलवाद जैसी परंपराओं के भीतर भी, 1 कुरिन्थियों में कुछ पाठों के बारे में भारी मतभेद हैं।

तो, जैसा कि हम देखते हैं, ये बड़े फ्रेम हैं। पूरी बाइबल के ये दृश्य बड़े फ्रेम हैं। परमेश्वर ने हमें इस समस्या से निपटने के लिए अपनी छवि में बनाया है।

उन्होंने हमारे लिए जीवन को सरल नहीं बनाया है क्योंकि वह हमें जोखिम और संघर्ष से निपटते हुए देखना चाहते हैं और उस विविधता से भी जिसका सामना हम हर दिन करते हैं। हम आम विभाजकों से जुड़े हुए हैं, और हमें वास्तव में उन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, लेकिन हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि आम विभाजकों के बावजूद, हमारे पास बहुत विविधता है। और यही हमें कभी-कभी अलग-अलग समुदायों में विभाजित करता है।

और समुदायों को एक दूसरे से नहीं लड़ना चाहिए। हमें आगे बढ़ने और समान मूल्यों को आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही, विभिन्न विचारों के बारे में दृढ़ विश्वास में गंभीर मतभेद हैं।

तो, आइए भ्रम से बाहर निकलें और इस तथ्य को समझें कि ये विविधताएँ मौजूद हैं, और वे एक ही बाइबिल से मौजूद हैं, और हमें एक ऐसा व्यक्ति होने की ज़रूरत है जो इतना पारंगत हो कि हम उस पर काम कर सकें और देख सकें कि प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण स्तर कैसे काम कर रहे हैं क्योंकि लोग धार्मिक समझ विकसित करते हैं। भ्रम के विचार के बाद पैराग्राफ में आगे बढ़ते हुए, ये विचार, सभी प्रकार के विचार, और आप इसमें अपने खुद के विचार जोड़ सकते हैं, पूरी बाइबिल के ये विचार बड़े फ्रेम हैं जो व्याख्याकारों को इसके भागों से पूरे के अर्थ को स्पष्ट करने में मदद करते हैं। अब, यह प्रत्येक दृष्टिकोण को एक निश्चित पथ पर ले जाता है।

यह प्रत्येक व्यक्ति को कुछ पाठों को समझने के लिए एक निश्चित प्रतिबद्धता भी देता है। और फिर भी, वे सभी एक ही पाठ का उपयोग कर रहे हैं और उनकी समझ अलग-अलग है। अब तक, आपको यह एहसास होना शुरू हो जाना चाहिए कि यह केवल एक ही बात नहीं है।

आपको पहले से ही इसका एहसास है। शायद आप इसे स्वीकार करने से डरते थे। लेकिन हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारी दुनिया में यही हो रहा है और उससे बाहर निकलकर पूरी इमारत को समझना और देखना शुरू करना होगा, न कि सिर्फ एक नज़रिए की नींव में चल रही चीज़ों से लड़ना होगा।

लेकिन देखें कि वे कहाँ जाते हैं, देखें कि वे कहाँ से आए हैं, और समझें। हम समझने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं क्योंकि यह समझ से ही है कि हम दृढ़ विश्वास के साथ अपने निष्कर्ष और दृढ़ विश्वास पर पहुँच सकते हैं। और समझ।

अब, यहाँ इटैलिकाइज़्ड भाषण पर ध्यान दें। निर्माण, यानी रचनात्मक निर्माण, पाठ पर हमारे निरंतर चिंतन का उत्पाद हैं। लेकिन वे शायद ही कभी किसी विशिष्ट प्रत्यक्ष संदर्भ से सिद्ध होते हैं।

अब, सहस्राब्दिवाद या धार्मिक प्रणालियों के उन सभी विरोधी विचारों में से प्रत्येक इस बात पर अड़ा हुआ है कि उनके पास एक पंक्ति में उनका प्रमाण पाठ है। और इसका यही मतलब है। लेकिन फिर कोई और व्यक्ति आता है जो उतना ही होशियार है, उतना ही विरोधी दृष्टिकोण से प्रशिक्षित है।

और हम एक को विधर्मी और दूसरे को विधर्मी नहीं कह सकते। न ही हम यह व्यक्तिपरक दावा कर सकते हैं कि आत्मा ने इस व्यक्ति को बताया लेकिन उस व्यक्ति को नहीं बताया। परमेश्वर की आत्मा इन सभी व्याख्याकारों के साथ काम करती है।

तो, क्या आत्मा भ्रमित है? नहीं। देखिए, आपको यह समझना होगा कि यह कैसे काम करता है ताकि आप समस्या के लिए परमेश्वर को दोषी न ठहराएँ। समस्या यह है कि परमेश्वर ने हमें प्रेरित शास्त्र तो दिया है, लेकिन प्रेरित व्याख्याकार नहीं दिए हैं।

क्योंकि हम ईश्वर की महिमा करते हैं जब हम शास्त्र की व्याख्या करते हैं और अपनी समझ और विश्वास के अनुसार जीते हैं, यहाँ तक कि ईसाई चर्च द्वारा दर्शाई गई विविधता में भी, इसलिए, ये निर्माण अब एक प्रेरक प्रक्रिया का उत्पाद हैं। मुझे परवाह नहीं है कि यह सहस्राब्दिवाद है या आर्मिनियनवाद और कैल्विनवाद जैसे धार्मिक निर्माण।

वे बाइबल का एक प्रेरक अध्ययन हैं जो उन विचारों को चिंतनशील फोकस में लाता है। अब, हमें शायद अपने स्कूल के दिनों में वापस जाना होगा, और तर्क के दर्शन के बारे में सोचना होगा। तर्क में, आप सीखते हैं कि निगमन निश्चितता की ओर ले जाता है।

प्रेरण से संभाव्यता की ओर अग्रसर होता है। वे दो क्षेत्र हैं: निगमनात्मक और आगमनात्मक। मैं इसे कहने के लिए उस सादृश्य का उपयोग करूँगा।

हमारे पास एक निगमनात्मक बाइबल है, बस उदाहरण के लिए। बाइबल निश्चित है। लेकिन हमारे पास उस बाइबल से सत्य निकालने और उस बाइबल से संदर्भ की समझ और अर्थ निकालने की एक आगमनात्मक प्रक्रिया है।

हम मनुष्य के रूप में एक प्रेरक प्रक्रिया में शामिल हैं, जो हमें ईश्वरीय नियंत्रण द्वारा दी गई पुस्तक का अध्ययन कर रही है, और हम मान सकते हैं कि यह सटीक है और हमारे अध्ययन, हमारे विश्वास और हमारी आज्ञाकारिता के योग्य है। लेकिन हम ऐसा कर रहे हैं और एक प्रेरक प्रक्रिया के माध्यम से अपने निष्कर्षों पर पहुँच रहे हैं। इसलिए, हम जितना अच्छा हो सकते हैं, उतना अच्छा होने के बावजूद, हम संभावना की निरंतरता पर हैं।

इन कारणों से हमारा दृष्टिकोण शायद दूसरे दृष्टिकोण से ज्यादा सही है। और इसी पर हम अपने विश्वासों को टिकाते हैं। हम नम्र हैं क्योंकि हम, मनुष्य के रूप में, कुछ हद तक संभावना की दुनिया में रहते हैं, चाहे हमारे विश्वास कितने भी मज़बूत क्यों न हों।

अब, कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए मैं एक ईसाई के तौर पर मर सकता हूँ। और हम सभी को इसमें शामिल होने की जरूरत है, और मुझे लगता है कि आज जिस तरह की दुनिया में हम रह रहे हैं, उसमें यह और भी ज्यादा जरूरी है। मेरा मानना है कि एक ईसाई को त्रिदेव और त्रिदेव के विचार, त्रिदेव के विश्वास के लिए मरना चाहिए।

और अगर हम ऐसा नहीं कर सकते, तो हम लगातार ईसाई नहीं हो सकते। मुझे लगता है कि एक ईसाई को इस तथ्य के लिए मरना चाहिए कि यीशु ईश्वर का शाश्वत पुत्र है जो ईश्वर के चमत्कारी कार्य द्वारा अवतार लिया गया था, जैसे कि मरियम के गर्भ में एक दिव्य बीज बोना। और यीशु अब ईश्वर-मनुष्य है।

वह उतना ही ईश्वर है, मानो वह कभी मनुष्य ही न रहा हो। वह उतना ही मनुष्य है, मानो वह कभी ईश्वर ही न रहा हो। भ्रमित होने या विलीन होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन वह ईश्वर-मनुष्य है।

अगर हम ऐसा नहीं मानते, तो हम ईसाई नहीं हैं। अब, हम इसमें कुछ और बातें जोड़ सकते हैं। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए हम मरने को तैयार हैं, जो वास्तव में निहित और रचनात्मक निर्माण धर्मशास्त्र हैं।

ये दोनों ही हैं। हमारे पास कोई प्रमाण पाठ नहीं है। हमारे पास निहितार्थ पाठ है जिसे हमने उस प्रणाली में स्थानांतरित कर दिया है।

लेकिन वे प्रेरण द्वारा, संभावना द्वारा वहाँ हैं। और फिर भी हमारे पास उस संभावना को परखने के लिए बहुत लंबा समय है, और इसलिए, इसलिए, चर्च ईश्वर और मसीह के बारे में कुछ मान्यताओं पर बहुत दृढ़ता से टिका हुआ है। हम कुछ और नहीं कर सकते।

अगर हम खुद को ईश्वर के प्रति समर्पित करने जा रहे हैं, तो यही हमारी विश्वास प्रणाली है। ये बुनियादी मान्यताएँ हैं जिन्हें हमें अपनाना चाहिए और उनके लिए मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। अन्यथा, हमारे पास कोई विश्वास प्रणाली नहीं है।

जो चीज महत्वपूर्ण और गंभीर होती है, उसका कोई प्रमाण पाठ नहीं होता, बल्कि उसमें शिक्षण की निहितार्थपूर्ण प्रक्रिया होती है। इसलिए, निहितार्थ महत्वपूर्ण है। यहां तक कि रचनात्मक रचनाएं भी महत्वपूर्ण हैं।

चर्च के पिता जो ऐसा करने के लिए बहुत, बहुत अच्छी तरह से सुसज्जित थे, अजीब बात है, कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, उनके पास औपचारिक शिक्षा नहीं थी। वे उत्पीड़न से बाहर आए थे। खैर, वे उन अधिकांश लोगों की तुलना में बहुत अधिक चतुर थे जिनसे मैं हर दिन मिलता हूं, और मैं एक विश्वविद्यालय सेटिंग में रहता हूं।

परिणामस्वरूप, वे इसे हम तक पहुँचाने में सक्षम थे, और हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे पास एक बाइबल है, जैसा कि मैं इस पृष्ठ के नीचे कहता हूँ। हमारे पास एक बाइबल है जो रहस्योद्घाटन का उत्पाद है।

यह एक निगमनात्मक बात है। लेकिन हम इसे समझने के लिए आगमनात्मक बाइबल अध्ययन विधियों का उपयोग करते हैं। औपचारिक तर्क में, निगमनात्मक रूप से ठोस तर्क निश्चितता की ओर ले जा सकते हैं।

लेकिन प्रेरण संभाव्यता की डिग्री की ओर ले जाता है। पृष्ठ 13 के शीर्ष पर। नतीजतन, चाहे हम अपने रचनात्मक निर्माण प्रणालियों के बारे में कितने भी तर्कपूर्ण और कितने भी आश्वस्त क्यों न हों, वे अभी भी केवल संभाव्यता अनिश्चितता के दायरे में हैं।

अब, आप कहेंगे, एक मिनट रुकिए, क्या आप खुद से ही विरोधाभास कर रहे हैं? आपने कहा कि आप त्रिदेव के लिए मर जाएंगे, और आप मसीह के हाइपोस्टेटिक एकता और उस प्रकृति की चीजों के लिए मर जाएंगे। हाँ, मैं मर जाऊंगा। और मेरे लिए, वे निश्चित हैं क्योंकि मैं उन पर विश्वास करता हूँ।

लेकिन मैं नास्तिकों के सामने इनमें से कुछ भी साबित नहीं कर सकता, क्योंकि नास्तिक, उदाहरण के लिए, बाइबल की शिक्षा के निहितार्थ पर विश्वास करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है। इसलिए, वे इसके साथ आगे नहीं बढ़ेंगे। फिर, मैं और अधिक धर्मशास्त्र की ओर लौटूंगा, जैसे कि आत्मा का विश्वास।

पवित्र आत्मा का काम दुनिया और चर्च में यही है कि लोगों को शास्त्रों की शिक्षाओं के बारे में समझाना है। उन्हें वह विषय-वस्तु नहीं देना है, बल्कि उस विषय-वस्तु के बारे में उन्हें समझाना है। और इसलिए यह ईसाई होने या किसी भी दृष्टिकोण के बारे में एक बहुत ही गहन स्तर का विश्वदृष्टिकोण है।

हर दृष्टिकोण में इस तरह की बात होती है। हर दृष्टिकोण में यह गैर-परक्राम्य बात होती है, अन्यथा यह दृष्टिकोण नहीं होता। मैं विश्वदृष्टिकोण, विश्व धर्म, इत्यादि के बारे में बात कर रहा हूँ।

हम ऐसे युग में जी रहे हैं, मैं यह व्याख्यान जून और जुलाई 2017 में दे रहा हूँ। और हम अभी एक ऐसे विश्व के बीच में हैं जो आतंकवाद के गहरे स्तर से जूझ रहा है। अब आतंकवाद कई रूपों और रूपों में आ सकता है।

लेकिन सच्चाई यह है कि हम आतंकवाद के गहरे संकट में जी रहे हैं। लोग रोज़ मर रहे हैं। ईसाइयों को अब इतिहास में पहले से कहीं ज़्यादा सताया जा रहा है।

इतिहास में किसी भी समय की तुलना में अब अधिक ईसाई शहीद हो रहे हैं। पश्चिमी दुनिया में, हम अक्सर इससे अछूते रहते हैं, भले ही इंग्लैंड और फ्रांस अब इससे अछूते नहीं हैं। अमेरिका के पास अपने क्षण थे और भविष्य में और भी बड़े क्षण होंगे।

लेकिन वह क्या है जो एक आतंकवादी को प्रेरित करता है? विश्वदृष्टि एक आतंकवादी को प्रेरित करती है। कोई व्यक्ति बॉल बेयरिंग और विस्फोटकों से भरी जैकेट क्यों बांधेगा और न केवल दूसरों को मारेगा बल्कि खुद को भी मार डालेगा? क्यों? यह राजनीतिक कारणों से नहीं है; यह एक धार्मिक सिद्धांत है। और जब तक आप इसे नहीं समझेंगे, तब तक आपको वास्तव में यह एहसास नहीं होगा कि यह कभी खत्म नहीं होगा।

क्योंकि जब तक कोई व्यक्ति किसी धार्मिक सिद्धांत के प्रति प्रतिबद्ध है, चाहे वह सही हो या गलत, यहां तक कि उसके अपने समुदाय के अनुसार, चाहे वह सही हो या गलत, उस तरह की प्रेरणा को कोई रोक नहीं सकता। और इसलिए, हाँ, चाहे हम ईसाई हों या किसी अन्य धर्म के, कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए हम मर सकते हैं क्योंकि हम उन विचारों के प्रति बहुत प्रतिबद्ध हैं। मैं इस बारे में बहुत कुछ बता सकता हूँ कि हम इतने प्रतिबद्ध क्यों हैं, और हम धर्मांतरण के मुद्दे पर जा सकते हैं और अपने धर्मांतरण को समझ सकते हैं।

1 यूहन्ना, एक पुस्तक के रूप में, हमें अपने परिवर्तन की प्रकृति को समझने और यह आश्चर्य होने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है कि हम वास्तव में मसीह को जानते हैं। यही उस पत्र का पूरा उद्देश्य है। लेकिन हम इस पाठ में इसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

लेकिन मैं इसे आपके सामने लाना चाहता था ताकि आप देख सकें कि रचनात्मक निर्माण का स्तर भी कितना गंभीर है। और फिर भी यह वास्तविक है। संभावना।

परिणामस्वरूप, चाहे हम अपनी रचनात्मक निर्माण प्रणालियों के बारे में कितने भी तर्कपूर्ण और कितने भी आश्चर्य क्यों न हों, वे अभी भी केवल संभावना के दायरे में हैं, निश्चितता के नहीं। गरमागरम धार्मिक बहसों पाठ के बारे में परस्पर विरोधी विचारों और निर्माणों का परिणाम हैं। मुझे लगता है कि यह ईसाई चर्च के लिए सबसे महत्वपूर्ण आंतरिक है और विशेष रूप से ईसाई चर्च के छोटे खंडों के लिए आंतरिक है।

हम इवेंजेलिकलिज्म शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जो अब लगभग एक अस्पष्ट शब्द है। इसका क्या मतलब है? और मैं अभी इसे परिभाषित करने की कोशिश भी नहीं करना चाहता, लेकिन मैं कुछ तरीकों से कर सकता हूँ, जैसे कि इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के पास धर्मग्रंथ और त्रिदेव के बारे में एक परिभाषा है, और अधिक परिभाषा देने की कोशिश कर रहा है। लेकिन तथ्य यह है कि अभी, उस अकादमिक सोसाइटी के भीतर इसकी यही परिभाषा है।

गरमागरम धार्मिक बहसें, लेकिन दुनिया भर में ईसाई चर्च के एक छोटे समूह के भीतर, यह बात जिसे व्यापक रूप से इंजीलवाद कहा जाता है, जो बाइबल के लिए उच्च सम्मान रखता है, और त्रिदेव में विश्वास करता है, और मसीह के ईश्वरत्व में विश्वास करता है, और इसमें रूढ़िवादिता से कहीं अधिक सामान्य विभाजक हैं। इस केंद्रित समुदाय में, कुछ अत्यंत गंभीर मतभेद हैं। हम इसे कैसे समझ सकते हैं? खैर, व्याख्या की संभावना के कारण, हमें अपने भाइयों और बहनों के बारे में अपनी समझ में विनम्र होने की आवश्यकता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हमें यह कहना है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इसका मतलब यह नहीं है कि हम व्याख्या करना छोड़ दें। इसका मतलब यह भी नहीं है कि हमें इन विविध समुदायों में कुछ चीजों के साथ अनिवार्य रूप से सहयोग करना होगा।

लेकिन इसका मतलब यह है कि अगर वे एक ही छत्र के नीचे हैं और हमारी तरह ही कई समान मूल मान्यताओं को मानते हैं, तो वे मसीह में भाई-बहन हैं। और हमें यह सीखने की ज़रूरत है कि कैसे साथ मिलकर काम करना है। हमें असहमत होने पर भी सहमत होने में सक्षम होना चाहिए।

हमें विविधता के बीच एकता बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। धर्मशास्त्र में एक प्रमुख विषय विविधता में एकता है। वास्तव में, हम इस विषय को 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में प्रमुख रूप से देखेंगे।

ठीक है, पृष्ठ पर अंतिम पैराग्राफ है, पृष्ठ 13 पर शीर्ष पैराग्राफ नहीं। जबकि रचनात्मक निर्माण अक्सर बड़े प्रतिमान के रूप में उभरते हैं, वे उस तक सीमित नहीं हैं। कई वैध रचनात्मक निर्माण हैं, और कई खराब रचनात्मक निर्माण हैं।

मैंने आपसे बुराई के सभी रूपों से दूर रहने के बारे में बात की, और कैसे उस आयत का इस्तेमाल लोगों को हेरफेर करने और लोगों को कुछ खास समझ में लाने के लिए किया जा सकता है। आप देखिए, जब तक आप बाइबल के अच्छे छात्र नहीं हैं, आप अपने जीवन के बाकी समय में हेरफेर का शिकार होने वाले हैं। लोग हर जगह आपको हेरफेर करने जा रहे हैं, इसके लिए बाइबल का इस्तेमाल करेंगे, और आपको नहीं पता होगा कि इसके बारे में क्या करना है।

यदि आप समझ लें कि हम इन परिचयात्मक व्याख्यानों में किस बारे में बात कर रहे हैं, तो आप दूसरों के बहकावे में आने से बच सकते हैं। उनका दावा है कि यह पाठ संगति के आधार पर अपराध के बराबर है, लेकिन यह उस पुराने अनुवाद के शब्दों को सतही रूप से पढ़ने से एक खराब रचनात्मक निर्माण है जिसे पाठ पर थोपा गया है। जब अध्ययन किया जाता है, तो इस पाठ का अर्थ हर तरह की बुराई से बचना होता है।

यह बुराई के आभास की तुलना में परिभाषा में कहीं अधिक ठोस है। इस पाठ पर संगति के द्वारा अपराध को थोपना न तो प्रत्यक्ष है और न ही निहित है, लेकिन यह किसी ऐसे व्यक्ति की बुरी कल्पना है जो बाइबल का उपयोग करके अन्य लोगों को उनकी समझ के अनुरूप ढालना चाहता है, और यह हजारों में से सिर्फ एक उदाहरण है। ऐसा व्यक्ति न बनें जो खुद को उस सेटिंग में आने देता है।

जैसे-जैसे आप त्रिभुज के निचले भाग से, प्रत्यक्ष निहित रचनात्मक निर्माण से ऊपर की ओर बढ़ते हैं, आप सरल प्रत्यक्ष रीडिंग से अधिक परिष्कृत धार्मिक संरचनाओं की ओर बढ़ते हैं। धार्मिक संरचना जितनी अधिक परिष्कृत होती है, उसे समझना और उससे निपटना उतना ही अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। अगले पैराग्राफ में, प्रत्येक विषय को अपने नोट्स में यहीं एक तारांकन चिह्न लगाएं; प्रत्येक विषय जिसे हम पढ़ाते हैं, या क्षमा करें, प्रत्येक विषय या पाठ जिसे हम पढ़ते हैं, उसका मूल्यांकन शिक्षण के इन तीन स्तरों के आधार पर किया जाना चाहिए।

पानी पीने के बाद आइए इसे एक बार और पढ़ें। हम जिस भी विषय या पाठ का अध्ययन करते हैं, उसका मूल्यांकन शिक्षण के इन तीन स्तरों के आधार पर किया जाना चाहिए। हमारे दृष्टिकोण के लिए हमारे द्वारा दावा किया गया बाइबिल पाठ पिरामिड पर कहाँ टिका है? क्या यह प्रत्यक्ष है? क्या यह निहित है? क्या यह एक रचनात्मक रचना है? और आपको इसका उत्तर अपने दिमाग से देने की ज़रूरत नहीं है।

आप इसका उत्तर यह पता लगाने के लिए शोध करके देते हैं कि आपकी बाइबिल पुस्तक के संबंध में विद्वानों के साहित्य के संदर्भ में यह कहाँ स्थित है, और आपको वहाँ बहुत सारी जानकारी मिल गई है। किसी के आत्मविश्वास और दृढ़ विश्वास की विनम्रता को भी उचित स्तर के अनुरूप मापा जाना चाहिए। हम सीधे और उस दिशा के अधिकार के लिए मर मिटेंगे।

हम कुछ खास निहितार्थों के लिए मर सकते हैं, लेकिन सभी के लिए नहीं। हममें से बहुत कम लोग रचनात्मक निर्माणों के लिए मरेगे। मैं सहस्त्राब्दिवाद के लिए नहीं मरूंगा।

मैं आर्मिनियन और कैल्विनिस्ट मुद्दों पर मरना भी नहीं चाहता। इनमें से किसी भी विचार के लिए मेरे अपने विश्वास और कारण हैं, लेकिन वे मृत्यु के विचार नहीं हैं। वे ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में हम बहस कर सकते हैं, लेकिन कुछ ऐसी चीजें हैं जिनके लिए हमें मरने के लिए तैयार रहना चाहिए।

समुदाय के हित के लिए समझौता करने की इच्छा भी पैमाने से संबंधित है। क्या आप रचनात्मक निर्माणों पर चर्च को विभाजित करने जा रहे हैं? खैर, मैं यह नहीं कहूंगा कि आपको रचनात्मक निर्माणों पर चर्च को विभाजित करना चाहिए। अब, कभी-कभी, एक समूह के रूप में, यदि आप इस बात पर आम सहमति पर पहुँच जाते हैं कि आप क्यों अलग हैं, तो आप स्वचालित रूप से विभाजित और जीतेंगे।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा तरीका है क्योंकि कुछ चीजें उतनी आसानी से एक साथ नहीं रह सकतीं जितनी कि अन्य चीजें, और धर्मशास्त्र महत्वपूर्ण है। और इनमें से प्रत्येक निर्माण कुछ निश्चित दिशाओं में ले जाएगा, लेकिन वे एक-दूसरे को गोली मारने के लिए कुछ नहीं हैं, या जैसा

कि मैंने एक बार उत्तरी कैरोलिना के पेपर में देखा था, जहां डीकनों ने हाथापाई की थी। खैर, यह सीमा से बाहर है। समुदाय की खातिर समझौता करने की इच्छा भी इस पैमाने से संबंधित हो सकती है।

समझौता समझ से आता है, हेरफेर से नहीं। मेरा मतलब है, क्या आपने सुना? समझौता समझ और असहमत होने पर सहमत होने की इच्छा से आता है, हेरफेर से नहीं। हम त्रिदेवों के लिए मर सकते हैं, लेकिन किसी निश्चित युगांतकारी स्थिति के लिए नहीं।

अगर कोई व्यक्ति किसी ऐसे दृष्टिकोण का दावा करता है जो केवल उसका अपना निर्माण है, तो आपको चीजों के बारे में उनके दृष्टिकोण के अनुरूप होने की कोई बाध्यता नहीं है। आदर्श वाक्य आपको पाठ पर अपने अलग-अलग विचारों की चर्चा के लिए आधार भी देता है। हम सभी में अपनी समझ को देवता मानने की प्रवृत्ति होती है।

अमेरिकी ईसाई धर्म हमारी संस्कृति से प्राप्त व्यक्तिवाद से नशे में है। इस व्यक्तिवाद के साथ ही स्व-प्रमाणित अधिकार की धारणा भी आती है। हालाँकि, धर्मशास्त्र के लिए एक समुदाय की आवश्यकता होती है।

हमें यह समझना चाहिए कि जैसे-जैसे हम पिरामिड के ऊपर चढ़ते हैं, हम प्राचीन परिवेश में लिखे गए एक प्राचीन पाठ को आधुनिक प्रश्नों से जोड़ने की प्रक्रिया में हैं, और हमें इस पर बातचीत करने और ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए। हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ते हुए इसके बारे में कुछ विशेष रूप से बात करेंगे। मैं अगले पैराग्राफ पर जाना चाहता हूँ।

पैराग्राफ में कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, क्या गुलामी भगवान की इच्छा के अनुसार एक स्वीकार्य प्रथा है? अधिकांश लोग नहीं कहेंगे, और मुझे लगता है कि ऐसा होना सही है, लेकिन जब कोई प्रमाण पाठ नहीं है तो आप अपने दृष्टिकोण का तर्क कैसे दे सकते हैं? आप देखिए, गुलामी के खिलाफ होना एक निहितार्थपूर्ण शिक्षा है।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा विचार है, लेकिन यह अभी भी उसी स्तर पर है। इसके अलावा, आप कुछ आधुनिक मुद्दों के संबंध में बाइबिल की चुप्पी की शर्मिंदगी से कैसे बचते हैं? संक्षेप में, जब संस्कृति पुराने रीति-रिवाजों से आगे बढ़ती है तो इतिहास की प्रगति में बाइबिल कैसे प्रासंगिक है, यह व्याख्याशास्त्र के लिए एक बड़ी चुनौती है। मैंने वास्तव में ज़ोंडरवन के साथ बाइबिल से धर्मशास्त्र की ओर बढ़ने पर चार दृष्टिकोण नामक एक पुस्तक संपादित की।

तो, अगर आप इस पर आगे बढ़ना चाहते हैं, तो यह ज़ोंडरवन से उपलब्ध है। यह लागोस सिस्टम में उपलब्ध है। मेरे पास लागोस सिस्टम में कुछ अन्य प्रकाशन भी हैं।

मेरा नाम लिखें, लेकिन हमेशा बीच में नाम लिखें, गैरी टी., और मेरा सामान सामने आ जाएगा। धर्मग्रंथ की व्याख्या की इस चर्चा के अलावा, अगला सवाल भी है। हमारे आधुनिक परिवेश में

धर्मग्रंथ को कैसे लागू किया जाता है? हम किस तरह से साधन से साधन तक पहुँचते हैं? खैर, यह कुछ ऐसा है जिस पर कुछ और चर्चा की आवश्यकता है।

यह हमारी परिचयात्मक सामग्री का हिस्सा नहीं है। संदर्भिकरण वह है जो इस प्रश्न के अध्ययन में जाना जाता है। आप उस संदर्भ को कैसे लेते हैं, अपने संदर्भ तक कैसे पहुँचते हैं, और एक वैध संबंध कैसे बनाते हैं? संबंध की कल्पना न करें।

आपको वैध संबंध बनाना होगा। यदि आप धर्मग्रंथ के अर्थ का उल्लंघन करते हैं, तो आपको यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि इसका क्या अर्थ है। आपको उद्देश्य से साधन की ओर बढ़ने की एक तर्कसंगत प्रक्रिया के साथ आना होगा ताकि आप धर्मग्रंथ का वैध उपयोग कर सकें।

ठीक है, जैसे-जैसे हम 1 कुरिन्थियों के अपने अध्ययन में आगे बढ़ेंगे, हम ऐसे कई पाठों का सामना करेंगे, जिन्हें समझने के लिए साहित्य में कई तरह के दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं, और हम उन कई चीजों पर काम करेंगे, जिनके बारे में हम इस परिचयात्मक सामग्री में बात कर रहे हैं। तो यही मैं कहना चाहता हूँ कि बाइबल हमें शिक्षण के इन तीन स्तरों में कैसे सिखाती है। हमारे परिचय में एक और खंड है जिसे मैं सत्यापन कहता हूँ।

यह बहुत लंबा खंड नहीं है। यह अब तक के हमारे व्याख्यानों से बहुत छोटा होगा। उस व्याख्यान के बाद, जो हमारा पाँचवाँ व्याख्यान होगा, हम तुरंत 1 कुरिन्थियों की पुस्तक के पाठ में चले जाएँगे और जो हमने परिचय में सीखा है उसे लागू करना शुरू करेंगे।

वास्तव में, मुझे कहना चाहिए कि हम 1 कुरिन्थियों के इतिहास, संस्कृति, पाठ, इत्यादि के बारे में औपचारिक परिचय की ओर बढ़ेंगे, और फिर हम उन पाठों को खोलना शुरू करेंगे। लेकिन अब तक हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह परिचयात्मक है और एक आधार तैयार करता है ताकि हम इस बारे में सोच सकें कि जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हम क्या कर रहे हैं।

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में हैं। यह व्याख्यान 4 है, बाइबल हमें बाइबल की शिक्षा के तीन स्तरों को कैसे सिखाती है, भाग 2।